SET A

CBSE X	**MT EDUCARE LTD.**	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - A**	
	SEMI PRELIM - II	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड: 'क'	
A.1.		
(क)	पहले भगवान पीतल की मूर्ति में लड्डू गोपाल के रूप में और फ्रेम किए फोटो के रूप में पूजे जाते थे ।	**2**
(ख)	पूजा-स्थल बड़ा होने के कारण मूर्तियाँ भी बड़ी होने लगी हैं । अब लोग पीतल या काँसे की विशालकाय प्रतिमाएँ खरीदने लगे हैं।	**2**
(ग)	पूजा के स्वरूप में आए बदलाव का युवा वर्ग पर यह प्रभाव पड़ा है कि अब युवा वर्ग पूजा मे ज्यादा रमने लगा है ।	**2**
(घ)	आज पूजा के लिए एक अलग कमरा तलाशा जाता है, भले ही वह छोटा क्यों न हो ।	**1**
(ङ)	पूजा के इस नए ट्रेंड को बनाने में हस्तशिल्प मेलों का बड़ा योगदान है ।	**1**
A.2.		
(क)	भारतवासी का जीवन इसलिए धन्य है क्योंकि उसका जन्म स्वर्ग-सी सुखद और वैभवशाली धरती की गोद में हुआ है ।	**2**
(ग)	विषुवत् रेखा पर भीषण गर्मी होती है । यहाँ के निवासी जल्दी थक जाते हैं और दुख पाते हैं ।	**2**
(ग)	ध्रुववासी भीषण ठंड और बर्फ में रहते हैं और सदा काँपते रहते हैं ।	**1**
(घ)	भारत की धरती को सकल विभवों की आकर कहा गया है । क्यों - भारत की धरती सब प्रकार के स्वर्गिक सुख देने वाली है ।	**1**
(ख)	स्वदेश - प्रेम	**1**
	खण्ड: 'ख'	
A.3.		
(क)	जिसने टोपी पहन रखी थी, वह बाबू कहाँ गया ।	**1**
(ख)	घर जाओ और गृहकार्य पूरा करो ।	**1**
(ग)	उस अपराधी को सजा मिली ।	**1**
A.4.		
(क)	हम जोर से नहीं बोल सकते ।	**1**
(ख)	रमा द्वारा अपशब्द नहीं बोला जाता ।	**1**
(ग)	बच्चों से मैदान में खेला जा रहा है ।	**1**
(घ)	बीमारी के बाद दादी से चला भी नहीं जाता ।	**1**

A.5.

(ख) वीर – विशेषण, 'पुरुष' विशेष्य का विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन । **1**

(ग) बहुत – परिणामवाचक क्रियाविशेषण, 'हँसना' क्रिया का विशेषण । **1**

(च) घंटी – संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग ।

कोई – अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग एकवचन । **1**

(छ) सौंदर्य – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, ताजमहल (विशेष्य) ।

होता है – अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, एकवचन, पुल्लिंग । **1**

A.6.

(क) श्रृंगार रस के भेद - संयोग श्रृंगार रस, वियोग श्रृंगार रस । **1**

(ख) भयानक रस का मूल स्थायी भाव भय है। **1**

(ग) भावों को जाग्रत करने के कारणों को 'विभाव कहते हैं । इसके प्रकार हैं - **1**

1. आश्रय 2. आलंबन 3. उद्दीपन

(घ) हास्य रस **1**

हाथी जैसी देह है, गैंडे जैसी खाल ।
तरबूजे सी खोपड़ी, खरबूजे से गाल।।

खण्ड: 'ग'

A.7.

(क) शीला अग्रवाल लेखिका की हिंदी-प्राध्यापिका थी । उन्होंने लेखिका को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने की प्रेरणा दी । उन्होंने अपनी जोशीली बातों से लेखिका के मन में उठे उबाल और उन्माद को हवा दी । **2**

(ख) शहर और देश में स्वतंत्रता-आंदोलन की भीषण हलचल थी । लेखिका भी उस हलचल और आंदोलन में शामिल थी । उधर घर में उसकी सक्रिय भागीदारी को लेकर बवंडर मचा हुआ था । पिता नहीं चाहते थे कि वह लड़कों के साथ खुलकर नारे लगाती हुई हड़तालें करे, भाषण दे, जलसे-जुलूस करे । **2**

(ग) लेखिका को उनके पिता ने सामाजिक आंदोलनों में भाग लेने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया । उन्होंने लेखिका को देश की परिस्थितियाँ समझने का अवसर प्रदान किया । **1**

A.8.

(क) लेखक अनुसार, वास्तविक संस्कृत व्यक्ति वह है जिसकी बुद्धि और विवेक ने किसी भी नए तथ्य का अनुसंधान और दर्शन किया होगा । जैसे-न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत खोजा । वह वास्तविक रूप से संस्कृत व्यक्ति था । **2**

(ख) हमारी परंपरा बहुत लंबी है । उसकी सभी बातें आज अपनाने-योग्य नहीं हैं । प्राचीन समय में कुछ बातें स्त्री-पुरुष में अंतर करती थीं । आज का युग समानता का युग है । आज लिंग-

	भेद स्वीकार्य नहीं है । अतः हमें परंपरा में से केवल उन्ही बातों को स्वीकार करना चाहिए जो स्त्री-पुरुष की समानता को बढ़ाती हों । तभी हमारा समाज उन्नति कर सकेगा ।	**2**
(ग)	लेखिका और उसके पिता के विचार आपस में टकराते थे । पिता लेखिका को देश-समाज के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे किंतु उसे घर तक ही सीमित रखना चाहते थे । वे उसके मन में विद्रोह और जागरण के स्वर भरना चाहते थे किंतु उसे सक्रिय नहीं होने देना चाहते थे । लेखिका चाहती थी कि वह भावनाओं को प्रकट भी करे । वह देश की स्वतंत्रता में सक्रिय होकर भाग ले । यहीं आकर दोनों की टक्कर होती थी । विवाह के मामले में भी दोनों के विचार टकराए । पिता नहीं चाहते थे कि लेखिका अपनी मनमर्जी से राजेंद्र यादव से शादी करे । परंतु लेखिका ने उनकी परवाह नहीं की ।	**2**
(घ)	जवारा के नवाब के साथ महादेवी वर्मा के पारिवारिक संबंध सगे-संबंधियों से भी अधिक बढ़कर थे । जवारा की बेगम ने ही इनके भाई का नामकरण भी किया । वे हर त्योहार पर उनके साथ घुलमिल जाती थी । ऐसे आत्मीय संबंधों की आज के समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती । आजकल तो हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के दुश्मन ही बने हुए हैं ।	**2**
A.9.		
(क)	कवि ने कठिन यथार्थ को पूजने की बात इसलिए की है क्योंकि वही सच्चाई है । उसी यथार्थ में जीना ही ज़िंदगी है ।	**2**
(ख)	'छाया' का अर्थ है–सपने या काल्पनिक संसार । कवि ने काल्पनिक संसार से बचने के लिए कहा है क्योंकि इससे मनुष्य को सुख की बजाय दुख मिलता है ।	**2**
(ग)	मृगतृष्णा का अर्थ है–सुख का भ्रम पैदा करने वाली भ्रामक चीजें ।	**1**
A.10.		
(क)	कवि के अनुसार फ़सलें पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव श्रम के मेल से बनी हैं। इसमें सभी नदियों के पानी का जादू समाया हुआ है । सभी प्रकार की मिट्टियों का गुण - धर्म निहित है । सूरज और हवा का प्रभाव समाया हुआ है । इन सबके साथ किसानो और मज़दूरों का श्रम भी सम्मिलित है ।	**2**
(ख)	'उत्साह' कविता कवि का आह्वान गीत है, जिसके स्वर में ओज है, क्रांति की अपेक्षा करता है और ऐसी अपेक्षा, जिसकी गरजना सुनकर उत्साह का संचार हो जाए । दुसरी ओर बादलों की फुहार और रिमझिम वर्षा से व्यक्ति के मन में कोमल भावों का जन्म होता है, शान्ति का अनुभव होता है । ऐसे भावों से कवि के मंतव्य को गति नहीं मिलती है । यही कारण है कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है ।	**2**
(ग)	माँ अपने सुख-दुख को, विशेषकर नारी-जीवन के दुखों को अपनी माँ, बहन या बेटी के साथ बाँट सकती है । शादी से पहले माँ और बहनें उसकी पूँजी थीं । वह उनके साथ बातें	

	कर सकती थी, सलाह ले-दे सकती थी । परंतु अब उसके पास बेटी ही एक मात्र पूँजी है । कन्यादान के बाद वह भी ससुराल चली जाएगी तो वह बिल्कुल अकेली रह जाएगी ।	2
(घ)	संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा बड़े-बड़े नेताओं, अभिनेताओं, संतों-महात्माओं के साथ भी इसी प्रकार सहयोग करते हैं । नेताओं के इर्द-गिर्द रहने वाले सभी सहायक उपनेता अपने बड़े नेता के महत्त्व को बढ़ाने में लगे रहते हैं । आम कार्यकर्ता, झंडे लगाने वाले, नारे लगाने वाले कार्यकर्ता संगतकार की भूमिका ही निभाते हैं । संतों-महात्माओं के आने से पहले उनकी महिमा का गुणगान करने वाले भक्त और उनके जाने के बाद उनका प्रचार करने वाले भक्त भी संगतकार के समान होते हैं ।	2
A.11.	एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरूपयोग रोकने में हमारी भूमिका यह है - हम टी. वी. पर आने वाले उन कार्यक्रमों का सशक्त विरोध करते हैं जो हमारी संस्कृति पर हमला करते हैं । विज्ञान का दुरूपयोग करने वाले डॉक्टरों की पोल खोलते हैं । मीडिया को बुलाकर उनके चेहरे को बेनकाब करते हैं ।	4
	अथवा भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी ने अपने विदेशी कपड़े देकर योगदान किया । विदेश वस्त्रों की होली जलाने के लिए देश के दीवानों का दल जब भैरवनाथ की सँकरी गली में घुसा, तब घरों की खिड़कियों से धोती, साड़ी, कमीज, कुरता, टोपी आदि की वर्षा होने लगी । दुलारी ने भी अपने घर की खिड़की खोली और मैंचेस्टर तथा लंकाशायर के मिलों की बनी बारीक सूत की मखमली किनारे वाली नई कोरी धोतियों का बंडल नीचे फैली चादर पर फेंक दिया ।	4
	खण्ड: 'घ'	
A.12. (क)	**छात्र और शिक्षक** **घर–प्रारंभिक पाठशाला, माता-पिता प्रथम शिक्षक** – पूरा जीवन एक विद्यालय है । हर व्यक्ति विद्यार्थी भी है और शिक्षक भी । कोई भी मनुष्य किसी से कुछ सीख सकता है । बच्चे के लिए सबसे पहली पाठशाला होती है– घर । माता–पिता ही उसके प्रथम शिक्षक होते हैं । वे उसे ईमानदारी, सच्चाई या बेईमानी का मनचाहा पाठ पढ़ा सकते हैं । वास्तव में माता-पिता जैसा आचरण करते हैं, बच्चा उसी को सही मानकर ग्रहण कर लेता है । **विद्यालय में शिक्षक ही माता-पिता** – विद्यालय में शिक्षक ही माता–पिता के समान होते हैं । वे बच्चों को अपनी प्रिय संतान के समान मानते हैं । उन पर बच्चों को संस्कारित करने का दायित्व होता है । इसलिए वे अच्छे कुंभकार के समान बच्चों की बुरी आदतों पर चोट	

करते हैं तथा अच्छी बातों की प्रशंसा करते हैं । शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की बुरी आदतों का समर्थन न करें, अपितु उन्हें उचित मार्ग पर लाने का प्रयास करें ।

शिक्षक का दायित्व : पढ़ाना, दिशा–निर्देशन, सत्कार्यों की प्रेरणा – शिक्षकों का दायित्व केवल पुस्तकें पढ़ाना नहीं है । अपना विषय पढ़ाना उनका प्रथम धर्म है । उन्हें चाहिए कि वे अपने विषय को सरस और सरल ढंग से बच्चों को पढ़ाएँ । उनका दूसरा दायित्व है– बच्चों को सही दिशा बताना । अच्छे–बुरे की पहचान कराना । तीसरा दायित्व है– बच्चों को शुभ कर्मों की प्रेरणा देना ।

छात्र का दायित्व, परस्पर संबंध – शिक्षा–प्राप्ति का कर्म छात्रों की सद्भावना के बिना पूरा नहीं हो सकता । जब तक छात्र अपने शिक्षक को पूरा सम्मान नहीं देता, तब तक वह विद्या ग्रहण नहीं कर सकता । कहा भी गया है– 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ।' श्रद्धावान को ही विद्या प्राप्त होती है । अपने शिक्षक पर संपूर्ण विश्वास रखने वाले छात्र ही शिक्षक की वाणी को हृदय में उतार सकते हैं । अच्छा छात्र हमेशा यही कहता है–

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय ।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताया ।।

दोनों परस्पर अपने–अपने दायित्वों को समझें – विद्या–प्राप्ति का कार्य शिक्षक और छात्र दोनों के आपसी तालमेल पर निर्भर है । कबीर कहते हैं–

सतगुरु बपुरा क्या करै, जे सिष माहिं चूक ।

यदि छात्र में दोष हो तो सतगुरु चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता । इसके विपरीत यदि गुरु अयोग्य हो तो उनकी स्थिति ऐसी हो जाती है– **10**

अंधे–अंधा ठेलया, दोनों कूप पड़ंत ।

(ख) **सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार**

आज सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार की जड़ें और गहरी होती जा रही हैं । उसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए समाधान के उपाय भी बताइए ।

विचार-बिंदु –
- भ्रष्टाचार का बढ़ता स्वरूप
- भ्रष्टाचार : एक नियमित व्यवस्था
- भ्रष्टाचार : क्यों और कैसे ?

भ्रष्टाचार का बढ़ता स्वरूप – भारत के सामाजिक जीवन में आज भ्रष्टाचार का बोलबाला है । यहाँ का रिवाज़ है– रिश्वत लो और पकड़े जाने पर रिश्वत देकर छूट जाओ । नियम और कानून की रक्षा करने वाले सरकारी कर्मचारी सबसे बड़े भ्रष्टाचारी हैं ।

भ्रष्टाचार का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बहता है । जब मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री स्वयं भ्रष्टाचार या घोटाले में लिप्त हों तो उस देश का चपरासी तक भ्रष्ट हो जाता है । यही स्थिति भारत की हो चुकी है । सरकारी कार्यालयों में बिना घूस दिए कोई काम नहीं होता । फर्जी बिल बनाए जाते हैं । बड़े-बड़े अधिकारी कागज़ों पर सड़कें, पुल आदि बनाते हैं और सारा पैसा खुद खा जाते हैं । सरकारी सर्वेक्षण बताते हैं कि किसी भी योजना के लिए दिया गया

	85% तो अधिकारी ही खा जाते हैं । **भ्रष्टाचार : एक नियमित व्यवस्था** – अब तो प्रीमियम, डोनेशन, सुविधा-शुल्क या नए-नए नामों से भ्रष्टाचार को व्यवस्था का अंग बना दिया गया है । कहने का अर्थ है कि सरकार तक ने इसे स्वीकार कर लिया है । इसलिए व्यापारियों और व्यवसायियों का भी यही ध्येय बन गया है कि ग्राहक को जितना मर्जी लूटो । कर्मचारी ने भी सोच लिया है-खूब रिश्वत लो और काम से बचो । **भ्रष्टाचार : क्यों और कैसे** – भ्रष्टाचार मनुष्यों की बदनीयती के कारण बढ़ा और उसमें सुधार करने से ही यह ठीक होगा । समाज के नियमों का पालन करने के लिए परिवार तथा विद्यालय में संस्कार दिए जाने चाहिए । दूसरे, प्रशासन को स्वयं शुद्ध रहकर नियमों का कठोरता से पालन कराना चाहिए । हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड दिया जाना चाहिए ताकि शेष सबको इमानदारी के लिए बाध्य होना पड़े । परंतु प्रशासन अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझ रहा । प्रश्न यह है कि ऐसा कब हो पाएगा ? यह समय पर निर्भर है । जब भी कोई दृढ़ चरित्रवान युवा नेतृत्व आर या पार की भावना से समाज को प्रेरणा देगा, तभी यह मैली गंगा शुद्ध हो सकेगी ।	**10**
(ग)	**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत** **मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति** : मन - मानव की सबसे बड़ी शक्ति 'मन' है । मनुष्य के पास मन है, इसलिए वह मनुष्य है, मनुज है, मानव है । मानसिक बल पर ही मनुष्य ने आज तक की यह सभ्यता विकसित की है । मन मनुष्य को सदा किसी - न - किसी कर्म में रत रखता है । **मन के दो पक्ष : आशा - निराशा** - धूप - छाँव के समान मानव - मन के दो रूप हैं - आशा - निराशा । मन में शक्ति, तेज और उत्साह ठाठें मारता है तो आशा का जन्म होता है । इसी के बल पर मनुष्य हजारों विपत्तियों में भी हँसता - मुसकराता रहता है । निराश मन वाला व्यक्ति सारे साधनों से युक्त होता हुआ भी युद्ध हार बैठता है । पांडव जंगलों की भूल फाँकते हुए भी जीते और कौरव राजसी शक्ति के होते हुए भी हारे । अतः जीवन में विजयी होना है तो मन को शक्तिशाली बनाओ । **मन की विजय का अर्थ** - मन की विजय का तात्पर्य है - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे शत्रुओं पर विषय । जो व्यक्ति इनके वश में नहीं होता, बल्कि इन्हें वश में रखता है, वह पूरे विश्व पर शासन कर सकता है । स्वामी शंकराचार्य लिखते हैं - ''जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया ।'' **मन पर विजय पाने का मार्ग** - गीता में मन पर नियंत्रण करने के दो उपाय बताए गए हैं - अभ्यास और वैराग्य । यदि व्यक्ति रोज - रोज त्याग या मोह - मुक्ति का अभ्यास करता रहे तो उसके जीवन में असीम बल आ सकता है । **मानसिक विजय ही वास्तविक विजय** - भारतवर्ष ने विश्व को अपने मानसिक बल से जीता है,सैन्य बल से नहीं । यही सच्ची विजय भी है । भारत में आक्रमणकारी शताब्दियों तक लड़ - जीत कर भी भारत को अपना न बना सके, क्योंकि उनके पास नैतिक बल नहीं था । शरीर	

- बल से हारा शत्रु फिर - फिर आक्रमण करने आता है मानसिक बल से परास्त हुआ शत्रु स्वयं इच्छा से चरणों में लोटता है । इसीलिए हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं - **10**

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें ।
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें ॥

A.13. सेवा में
शिक्षा निर्देशक
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली ।

विषय : सहायक अध्यापक पद के लिए आवेदन ।

महोदय

फरवरी २०, २०१७ के 'हिंदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर में मैं गणित विषय में सहायक- अध्यापक पद के लिए आवेदन करता हूँ । मेंरी शैक्षणिक योग्यताएँ एवं अन्य जानकारियाँ इस प्रकार हैं -

नाम क. ख. ग.
पिता का नामः अ.ब.क
जन्मतिथि - २-१०-१९९४
स्थायी पत्ता :क .ख. ९ / १८ विजय नगर, दिल्ली

शैक्षणिक योग्यताएँ :

परीक्षा	वर्ष	अंक	प्रतिशत	विषय	बोर्ड./यूनि.
मैट्रिक	२००९	४६४/६००	७७.४	हिंदी,अंग्रेजी,विज्ञान,गणित	दिल्ली
बारहवीं	२०११	२८०/४००	७०	हिंदी,अंग्रेजी,विज्ञान,गणित	दिल्ली
बी.एस.सी	२०१४	८००/१२००	६६.५	रसायन,भौतिकी,इलेक्ट्रानिक्स्	दिल्ली
बी.एड.	२०१६	५००/७००	७१.५	विज्ञान 'ए'	दिल्ली

मै इसी वर्ष परीक्षाएँ उत्तीर्ण करके निकला स्नातक हूँ। अध्यापन-कर्म में उत्साह से प्रवेश करना चाहता हूँ। कृपया अवसर देकर कृतार्थ करें ।

धन्यवाद !

प्रार्थीः
अ.ब.स
.... पता
दिनांक मार्च, १५, २०१७ **5**
संलग्नः प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपियाँ ।

अथवा

३/ १६९, मालवीय नगर
जयपुर।
२७ मार्च, २०१६
प्रिय मित्र रोहित

आज प्रातः 'नवभारत टाइम्स' में यह दुखदायी समाचार पढ़ा कि मिग दुर्घटना में अक्षय की मृत्यु हो गई। समाचार में लिखा था कि वायुसेना का कोई समारोह था जिसमें हवाई- प्रदर्शन कर रहा था । मित्र! इस संकट की घड़ी में धीरज रखना । भाभीजी को सांत्वना देना, बच्चों को सँभालना । माता -पिता भी इस हादसे से व्यथित होंगे । तुम्हारा कर्तव्य है कि परिवार को सँभालना।

भाई के चले जाने पर परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ अब तुम्हारे ऊपर हैं। भगवान से प्रार्थना है कि तुम्हें इस भारी दुख को सहने की शक्ति दे । मित्र! अपने आपको अकेला मत समझना । इस समय सभी तुम्हारे साथ है ।

तुम्हारा मित्र
श्री निवासन **5**

A.14. (क)

स्वर्णिम भविष्य की दस्तक!
सरस्वती विद्यालय
जी.टी. रोड, अंबाला
केवल कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों के लिए

- व्यक्तित्व विकास की सभी आधुनिक सुविधाएँ!
- आधुनिक प्रयोगशालाएँ!
- इंडोर तथा आउटडोर खेलों का प्रबंध!
- संगीत, नृत्य, संभाषण हर छात्र के लिए आवश्यक!
- राष्ट्रीय प्रतिभाओं के साथ संपर्क को प्रोत्याहन!

अवसर मत चूकिए!
केवल 100-100 सीटें!
प्रवेश साक्षात्कार और 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर!

निदेशक
मोहन पवार
संपर्क : 989234567 **5**

अथवा

!! **ब्यूटी** !!
साबुन से नहीं, ब्यूटी से नहाइए!
दिन-भर तरोताजा रहिए!
महकते रहिए, चहकते रहिए!
तन-मन को शीतल रखिए!
फ्रैश से नहाएँगे तो गुनगुनाते रहेंगे!
सभी बड़े स्टोरों पर उपलब्ध ।
आजमाइए, आज ही!!

भारत सोप फैक्ट्री : 140, अलका भवन, गोरेगांव पूर्व, मुंबई । **मोबाइल** : 09246835

5

❖❖❖❖❖